राष्ट्र-ध्वज के निर्माता

# पिंगलि वेंकय्या

डॉ.वेन्ना वल्लभराव

एमेस्को

## राष्ट्र-ध्वज के निर्माता

# पिंगलि वेंकय्या

हरेक राष्ट्र का अपना ध्वज होता है। राष्ट्रीय ध्वज किसी स्वतंत्र राष्ट्र की पहचान है। ध्वज राष्ट्र के स्वाभिमान का प्रतीक है। वह राष्ट्र के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है। राष्ट्र के निवासी उसे अपने देश एवं जाति का प्रतीक मानकर उसका आदर करते हैं और उसपर अपने प्राण न्यौछावर करने केलिए तैयार रहते हैं। राष्ट्रीय ध्वज राष्ट्रीय भावना का प्रेरक होता है। समूचे देशवासी, चाहे वे किसी भी धर्म के अनुयायी हों या किसी भी क्षेत्र के रहनेवाले हों अथवा कोई भी भाषा बोलनेवाले हों, वे उस ध्वज की मान्यता समान रूप से देते हैं और उसपर मर मिटते हैं। राष्ट्रीय ध्वज देशभक्ति का प्रभावशाली चिह्न है, जिसकी विविध और विस्तृत व्याख्याएँ की जा सकती हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसी ध्वज के द्वारा कोई राष्ट् पहचाना जाता है। राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्र-गीत और राष्ट्र-भाषा सर्वथा आदर के पात्र होते हैं।

भारत पर अंग्रेजों का शासन शुरू होने से पहले देश केलिए एक राष्ट्रीय ध्वज नहीं था। क्योंकि इस देश को अनेक राजवंशों ने शासित किया था। मौर्यों का 'गरुड' ध्वज और मुगलों का 'आलम' बहुत प्रसिद्ध राज्य-चिह्न थे। अंग्रेजों के आगमन के समय तक भारत में लगभग 560 रियासतें विद्यमान थे, जिनके अपने-अपने झण्डे अथवा राज्य-चिह्न थे। इसप्रकार इस विशाल देश में एक साथ विभिन्न प्रकार के ध्वज अस्तित्व में रहे थे। भारत में व्याप्त राजनैतिक अनेकता ही इसका प्रमुख कारण था। यह विशाल देश कुछ समय केलिए एक रहा था तो ज्यादा समय केलिए छोटे-

छोटे राज्य खण्डों में। शक्तिशाली और दूरदर्शी राजाओं के शासन काल में ही भारत एक शासन के अधीन था। शक्तिहीन, अदूरदर्शी और स्वार्थी राजाओं के आते ही भारत की एकता टूट गयी थी। जब कभी भारत में राजनैतिक एकता छिन्न-भिन्न हुई, देश के भीतर कई छोटे-मोटे राज्य स्थापित हो गये और उन राज्यों का शासन करनेवाले राजाओं ने अपने-अपने राज्य को ही राष्ट्र मान लिया था। उन्होंने अपने राज्यों केलिए अलग-अलग प्रतीक चिह्न अथवा ध्वज रख लिये। अंग्रेज शासन के विरुद्ध सन् 1857 में सिपाहियों का विद्रोह होने तक देश में यही हालत बनी रही।

**राष्ट्रीय ध्वज का इतिहास :**

भारत के सभी राज्यों को संगठित करके, अंग्रेजों के विरुद्ध लडने केलिए एक राष्ट्रीय ध्वज के रहने का विचार बहुत पुराना था। सन् 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध भारतवासियों से किये गये प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय ही भारत केलिए एक राष्ट्रीय ध्वज बनाने की योजना बनी थी, किन्तु वह आंदोलन असमय ही समाप्त हो गया था और उसके साथ ही वह योजना बीच में ही अटक गयी थी।

सन् सत्तावन के बाद अंग्रेज शासकों ने सारे भारत को एक झण्डे के अधीन लाने का विचार प्रकट किया। परिणामस्वरूप भारत पर शासन ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से सीधे

अंग्रेज शासकों के हाथों में चला गया था। उनके द्वारा ब्रिटिश भारत केलिए बनाया गया पहला झण्डा कैनडा, आस्ट्रेलिया जैसे अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों की ही तरह पाश्चात्य वंशावली मानक के आधार पर रूपायित किया गया था। इस ब्रिटिश भारतीय झण्डे में नीले रंग की एक ही पट्टी के बाये हिस्से के ऊपरी कोने पर यूनियन जैक अंकित था और दाये आधे हिस्से के बीच भारत का सितारा शाही मुकुट पर अंकित हुआ था।

जब यह सवाल उपस्थित हुआ कि सितारा किस प्रकार 'भारतीयता' को प्रतिबिंबित करता है, तब भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की सेवाओं का सम्मान देने केलिए रानी विक्टोरिया ने सन् 1861 में ब्रिटिश अधिकारियों और प्रशासकों की तरह, भारत के राजाओं और प्रमुखों को भी भारतीय

सितारा से युक्त नाईटहुड का ओहदा प्रदान करना शुरू किया। उसके बाद यूरोप की वंशावली पर आधारित प्रतीकों से अंकित लाल ब्रिटिश झण्डे, फहराने के अधिकार के साथ, भारत के सभी राज्यों को भेज दिये गये।

20 वीं शताब्दी के आरंभ में, यानी लगभग एड्वर्ड ज्क्ष के राज्याभिषेक के समय, भारतीय साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करनेवाले अधिक उपयुक्त चिह्न की आवश्यकता पर चर्चाएँ शुरू हुईं। भारतीय सिविल सेवा के एक ब्रिटिश सदस्य विलियम कोल्डस्ट्रीम ने अभियान चलाया कि ब्रिटिश सरकार झण्डे के 'सितारे' को बदलकर, उसके स्थान पर आम पसंद के आधार पर कोई अधिक उपयुक्त चिह्न को रखें। किन्तु सरकार ने उसके प्रस्ताव को उचित नहीं समझा। लार्ड कर्जन ने झण्डों के बहुलीकरण की समस्या के साथ-साथ कुछ अन्य व्यावहारिक कारणों से उसे अस्वीकृत कर दिया।

करीब इसी समय, अधिराज्य के भीतर धार्मिक परंपरा के जरिए एक राष्ट्रीय मत प्रतिनिधित्व के रूप में आगे बढ़ा। राष्ट्रीय झण्डे केलिए कई चिह्नों का प्रस्ताव सामने आया। बालगंगाधर तिलक ने 'गणेश' का तथा अरबिंदो घोष और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 'काली' चिह्न का प्रस्ताव रखा। एक और प्रस्ताव 'गाय' अथवा 'गोमाता' का चिह्न था। परंतु ये सभी चिह्न हिंदू केन्द्रित ही थे, ये भारत के मुस्लिम समुदाय के साथ एकता स्थापित करनेवाले सिद्ध नहीं हो सके।

बंग-भंग (सन् 1905) ने भारत के सभी वर्णों तथा धर्मों के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने केलिए एक नया राष्ट्रीय झण्डा दिया। यह झण्डा 'वंदे मातरम्' झण्डे के नाम पर प्रचलित हुआ। इस झण्डे ने अंग्रेजों के विरुद्ध चलाये गये स्वदेशी आंदोलन का हिस्सा बनकर, भारतीय धार्मिक प्रतीकों को पश्चात्य तरीके में समाविष्ट किया था। इस तिरंगे झण्डे को लाल, पीले और हरे रंगों की तीन क्षैतिज पट्टियों में बनाया गया था। ऊपर की हरी पट्टी पर आठ राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हुए आठ सफेद कमल अंकित थे तथा नीचे की लाल पट्टी पर सूरज और चाँद बनाये गये थे। बीच की पीली पट्टी पर देवनागरी में 'वंदे मातरम्' लिखा गया था। बंगाल विभाजन के विरुद्ध कलकत्ते में 7 अगस्त सन् 1906 को पारसी बगान चौक (ग्रीन पार्क) में शचींद्रप्रसाद बोस ने इस प्रथम राष्ट्रीय झण्डे को उद्घाटित किया

था। इस झण्डे का प्रयोग भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में हुआ था।

बाद में, इस झण्डे को थोडे-से परिवर्तन के साथ मैडम भीकाजी कामा और उनके साथ निर्वासित किये गये कुछ क्रांतिकारियों ने सन् 1907 में पेरिस में फहराया था। यह झण्डा बर्लिन में हुए द्वितीय समाजवादी सम्मेलन में भी प्रदर्शित किया गया था। कई बार प्रयोग में लाने पर भी यह झण्डा भारत के राष्ट्रीयवादियों पर विशेष प्रभाव नहीं डाल सका।

लगभग इसी समय स्वामी विवेकानंद की शिष्या भगिनी निवेदिता ने भारत केलिए एक राष्ट्रीय झण्डा चित्रित किया था। इसे भी सन् 1906 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रस्तुत किया गया था। इसके साथ ही कुछ अन्य प्रस्ताव भी आये, उनमें से कोई भी झण्डा स्वतंत्रता आंदोलन का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सका।

सन् 1917 में देश के राजनैतिक संघर्ष ने एक नया मोड लिया और होम रूल आंदोलन शुरू हुआ था। इस आंदोलन के दौरान डॉ.एनी बीसेंट और लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने एक और नया राष्ट्रीय झण्डा फहराया था। इस झण्डे में पाँच लाल और चार हरी क्षैतिज पट्टियाँ एक के बाद एक तथा सप्त ऋषि के प्रतीक स्वरूप सात तारे थे। बाँयी ओर ऊपरी किनारे पर यूनियन जैक था। एक कोने में अर्ध चंद्र और सितारा भी था। इस झण्डे पर अंग्रेजों के यूनियन जैक के रहने की वजह से, यह देश के स्वतंत्रता-प्रेमियों का आदर प्राप्त नहीं कर सका।

भारतीय राष्ट्रीय झण्डा अपने आरंभिक रूप से वर्तमान रूप में पहुँचने से पूर्व अनेक पडावों से होकर गुजरा था। उपर्युक्त पडावों के पश्चात् जो मंजिल आया, वह सचमुच ऐतिहासिक था। स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज का मूल रूप इसी मंजिल पर उपलब्ध हुआ था। उस ऐतिहासिक झण्डे के रूपकार दक्षिण भारत के आध्र प्रांत के एक तेलुगु भाषी पिंगलि वेंकय्या थे।

पिंगलि वेंकय्या बहुत बडे देशप्रेमी और स्वतंत्रता सेनानी थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बडे उत्साही कार्यकर्ता थे। कांग्रेस के सभी कार्यक्रमों में वे नियमित रूप से भाग लिया करते थे। सन् 1921 में बेजवाडा